से 4.50 लाख टन सहकारी क्षेत्र में और 4 लाख टन निजी क्षेत्र में उपलब्ध कराने के बारे में लिखा है। वह पूरी मात्रा में नहीं भेजी गई है, जबकि प्रदेश सरकारें उर्वरक के लिए केंद्र सरकार पर निर्भर रहती हैं। मान्यवर, मैं बुंदेलखंड से हूँ, जहां एक विशेष प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। चित्रकूट धाम में चार जिले पड़ते हैं, जहां फॉस्फोरस, पोटाश और नाइट्रोजन जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की कमी होती है। मान्यवर, वहा एनपीके उर्वरक पड़ता है। वहां 1335 मीट्रिक टन की मांग की गई थी, जो कि शुरू में नदारद रहा, जबकि बुंदेलखंड का किसान वैसे ही परेशान रहता है।

अतः में मैं केंद्र सरकार से मांग करता हूँ कि हमारी प्रदेश सरकार ने जो मांग की है, चाहे वह यूरिया के बारे में हो, डीएपी के बारे में हो या एनपीके के बारे में हो, उसको पूरा किया जाए, धन्यवाद।

Creating social awareness about donating human organs of brain dead persons

श्री मनसुख एल. मांडविया (गुजरात)ः सर, आज के बदलते हुए समय में रोड पर होने वाले एक्सिडेंट्स की संख्या बढ़ रही है। मैं कल अखबार में देख रहा था कि एक साल में पूरे हिन्दुस्तान में कुल मिलाकर दो लाख लोगों का एक्सिडेंट रोड पर हुआ है। जो एक्सिडेंट्स रोड पर होते हैं, उनके शिकार ज्यादातर यूथ होते हैं, जो गाड़ी चलाते हैं। एक यूथ का एक्सिडेंट हो जाने से उसका इफेक्ट उसके पूरे परिवार पर पड़ता है, क्योंकि परिवार का मुख्य व्यक्ति चला जाता है।

सर, जो लोग अपनी लाइफ गंवा देते हैं, उनमें से कई लोग ऐसे होते हैं जिनके ब्रेन में शॉक लगती है और उनका ब्रेन डेड हो जाता है, लेकिन उनकी बॉडी जीवित रहती है। वैसी स्थिति में, हमारे देश में ऐसे भी बहुत लोग हैं, जिनको अपनी बॉडी में लीवर और किडनी जैसे ऑर्गन्स की आवश्यकता होती है, क्योंकि उनमें कोई न कोई बीमारी होती है। अगर उनके उन ऑर्गन्स को रिप्लेस किया जाए तो उनकी लाइफ बच सकती है। जिस प्रकार कोई परिवार अपने किसी सदस्य को गंवा देता है, उसी प्रकार किसी परिवार के सदस्य को लाइफ भी मिल सकती है। इसलिए ऐसे जो लोग हैं, उनके ऑर्गन्स के लिए एक बैंक बनाया जाए। सभी स्टेट्स में एक-एक ऑर्गन्स बैंक हो, जिसमें उन्हें अच्छी तरह से रखा जाए और जो जिन लोगों को उसकी जरूरत हो, वैसे लोगों को वे दिए जाएँ। इसलिए मेरी यह रिक्वेस्ट है कि सभी स्टेट्स में the Central Government should take an initiative and वह सभी स्टेट गवर्नमेंट को सपोर्ट करे, उन्हें इंसेंटिव्स दे ताकि सभी स्टेट्स में ऐसे बैंक्स बनें और इन ह्यूमन ऑर्गन्स को उनमें रखा जाए। इन ह्यूमन ऑर्गन्स से दूसरे लोगों को लाइफ मिले और उनका परिवार बच जाए। थैंक्यू सर।

Observing Thiruvalluvar's birth anniversary

श्री तरुण विजय (उत्तराखंड)ः उपसभापति महोदय, भाषा केवल शब्दों और वाक्यों का संयोजन नहीं, वरन् सस्कृंति और सभ्यता की संवाहिका होती है। वह केवल एक भीड़ नहीं है, बल्कि उसमें अतीत का इतिहास, वर्तमान का सत्य और भविष्य की आशा होती है। यह भाषा विवाद का विषय न बने, बल्कि भाषा-सेतु बने। The language should not be a barrier but it should be a bridge. That is the reason. इसलिए मैं आज बताना चाहता हूँ कि भाषा के ऊपर विवाद न हो।

सर, तिरुवल्लुवर दक्षिण भारत में 2000 साल पहले हुए, लेकिन जब मैं उत्तर भारत मे जाता हूँ, वहां के लोगों से तिरुवल्लुवर का नाम पूछता हूँ, तो वे कहते हैं कि क्या, कौन तिरुवल्लुवर, किसके

बारे में पूछ रहे हैं ? उपसभापति महोदय, भारत केवल तुलसी और वाल्मीकी नहीं है, भारत कन्नगी और तिरुवल्लुवर भी है, उनके बिना भारत अधूरा है । हम संघ के प्रातः स्मरण में नयनमारा लवाराष्ट्र, तिरुवलावरस्तथा और साध्वी कन्नगी, इन सबके नाम लेते हैं । अतएव, मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब मैं हिमालय से कहूँ- *"तमिलअन्नैक्कु मुदलवनक्कम्"*, इसका अर्थ है कि हम हिमालय के लोग, सब आपको प्रणाम करते हैं, आपका सम्मान करते हैं ।

उपसभापति महोदय, *"अगर मुदल एलुतेल्लाम आदि भगवन मुदट्रे उलगु"*, ये तिरुक्कुरल का पहला कुरल है । तिरुवल्लुवर का जन्म दिन और उनका जीवन उत्तर भारत के सभी राज्यों में मनाया जाना चाहिए, उत्तर भारत के विद्यालयों में मनाया जाना चाहिए और उनकी जीवन-कथा सभी राज्यों के विद्यालयों में प्रधानाचार्य बताएँ, यह मैं आग्रह करना चाहता हूँ । उपसभापति महोदय, तमिल भारत की प्राचीनतम भाषाओं में है। कन्नड़, बांग्ला, तेलूगु आदि सभी भाषाएँ अच्छी हैं । यूनेस्को में भारत का जो मेमोरी रजिस्टर गया, उसमें अगर कोई एकमात्र भाषा गई, तो वह तमिल गई । इसलिए हम उनके प्रति सम्मान करें, सेतु बनाएँ और तिरुवल्लुवर का जन्म दिवस हम पूरे देश में मनाएँ, यह मेरा आग्रह है । धन्यवाद ।

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी): सर, मैं इस विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूँ ।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री रवि शंकर प्रसाद): सर, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ ।

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): सर, मैं इस विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूँ ।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

SHRI K.R. ARJUNAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

DR. V. MAITREYAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

SHRI T. RATHINAVEL (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

SHRI A.K. SELVARAJ (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: We also associate ourselves with this Zero Hour Mention.